भारत जैसे बहुभाषी देश में मातृभाषा के अलावा कोई दूसरी भाषा सिखाने में अनेक चुनौतियां आती हैं। ऐसे में पाठ्यपुस्तक इसका एक जरिया बनती है। राजस्थान में आरंभिक कक्षाओं के लिए अंग्रेजी की नई पाठ्यपुस्तकें विकसित की गई हैं। इन पाठ्यपुस्तकों पर यह समीक्षा शिक्षणशास्त्र को केन्द्र में रखकर की गई हैं।

आशा-निराशा के बीच

राजस्थान की अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें

प्रियंका गोस्वामी

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हाल में आरंभिक स्तर के लिए 'सनबीम' नाम से प्रकाशित अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तकें पहले की 'अरावली रीडर' (Aravali Reader) से बेहतर नजर आती हैं। अरावली रीडर पेज एवं छपाई की गुणवत्ता, विषयवस्तु के चयन तथा शिक्षणशास्त्रीय नजरिए आदि के लिहाज से काफी खराब थीं, जिसके चलते बच्चों का अंग्रेजी सीख पाना मुश्किल था। नई पाठ्यपुस्तकों से अभी तक अंग्रेजी शिक्षण में बनी हुई सीमाओं से पार जाने की उम्मीद की जा रही थी। इस विश्लेषण में यह समझने की कोशिश है कि अंग्रेजी की यह पाठ्यपुस्तकें तृतीय भाषा (राजस्थान के संदर्भ में पहली मातृभाषा, दूसरी हिन्दी भाषा और तीसरी अंग्रेजी) के सीखने में कितनी उपयुक्त हैं?

'सनबीम' को देखने से लगता है कि ये पाठ्यपुस्तकें बच्चों में एक सीमा तक जिज्ञासा जगाएंगी। ये किताबें अपने आकार, कवर पेज, साज-सज्जा, पेज की मोटाई आदि के लिहाज से बेहतर नजर आती हैं। इन पुस्तकों को रंगीन बनाने का प्रयास सराहनीय है। रचनाओं के चयन में वैविध्य दिखता है, वहीं अभ्यासों में भी सवाल-जवाब से आगे बढ़ा गया है। हालांकि पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाएं बच्चों से कितना जुड़ाव बना पाएंगी और चयनित रचनाओं की गुणवत्ता कैसी है, यह आगे की चर्चा का हिस्सा होगा।

सनबीम की इस शृंखला में कक्षा 1, 3, 5, 6, 7, 8 की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। प्रत्येक पाठ्यपुस्तक पांच विषयवस्तुओं पर आधारित है और प्रत्येक विषयवस्तु में तीन पाठ हैं। कक्षा 3 में होम, रिलेशनशिप्स, राजस्थान, सीजन्स, साइंटिफिक टैम्पर तथा कक्षा 5 में फैस्टिवल्स, टैक्नोलॉजी, चाइल्ड राइट्स, नैचुरल रिसोर्सेज, पैट्रोटिज्म/ब्रेवरी और कक्षा 6 में होम/फैमिली/रिलेशनशिप्स, ब्रेवरी/करेज/एक्सप्लोरेशन, लाइफ स्किल्स, ह्यूमर, कल्चर/हैरिटेज /एन्वायरमेंट नामक थीम्स हैं। कक्षा 7 एवं 8 में तीन-तीन के युग्म में पाठ हैं, यानी कोई एक विषयवस्तु नहीं है। अतः यह समझ

लेखक परिचय

अजीम प्रेमजी यूनीवर्सिटी, बैंगलोर से आरंभिक शिक्षा में एम.ए. करने के बाद दिगन्तर में एसोशिएट फैलो के रूप में कार्य कर रही हैं।

नहीं आता कि क्या पाठ संख्या को ही विषयवस्तु मान लिया गया है?

पाठ्यपुस्तक पर कार्य करने के लिए अलग से शिक्षक निर्देशिका की बजाय प्रत्येक थीम की समाप्ति पर 'शिक्षक पेज' दिया गया है। शिक्षक निर्देश कुछ शीर्षकों में बंटे हैं जिसमें 'वार्म अप एक्टिविटी', 'रीडिंग वौकेबलरी', 'लिसनिंग/स्पीकिंग', 'लैंग्वेज आइटम', 'राइटिंग', 'प्रोजेक्ट वर्क', 'आइडियाज् फॉर इवेलयूएशन' शामिल हैं। कक्षा 1, 3, 5 में प्रत्येक थीम के बाद ऐसी रचनाएं हैं जिन पर बच्चे को कोई अभ्यास कार्य नहीं करना है। प्राथमिक कक्षाओं की अपेक्षा उच्च प्राथमिक कक्षाओं में ज्यादा विस्तृत फलक की रचनाओं को जगह मिली है।

रसविहीन रचनाएं

बच्चों से जुड़ाव बनाने में रचनाओं का चयन एवं उसकी गुणवत्ता अहम स्थान रखते हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में रचनाओं के चयन एवं उनकी शैलियों में वैविध्य है। इनमें नाटक, निर्देश, डायरी, मैन्युएल्स्, कॉमिक्स, कविता, कहानी आदि विधाओं को शामिल किया गया है। परन्तु चुनी गई रचनाओं की गुणवत्ता चिंताजनक है। पाठकों की उम्र एवं संज्ञानात्मक समझ के अनुसार रचना चुनते समय उसे तीन स्तरों पर देखा जा सकता है जिसमें: (1) शब्द के स्तर पर यानी रचना में शब्दों का चयन एवं उनकी बुनावट जिससे पढ़ने में लय आती है। (2) रचना में चल रहे कालों में संबंध का होना, जो उसको समग्रता में समझने की सामर्थ्य देता है। (3) रचनाओं से पाठक का जुड़ाव यानी रचनाओं में यह ताकत होनी चाहिए कि वह बच्चों के अनुभवों से जुड़ाव बना पाए और यह जुड़ाव रचना में निहित कुछ सार्वभौमिक मनोभावों से आता है, जैसे ईर्ष्या, प्रेम, घृणा, दोस्ती, हास्य इत्यादि। दूसरे शब्दों में कहें तो रचना में विविध पात्रों/आवाजों का मौजूद होना। इन पाठ्यपुस्तकों में यहां से समस्या की शुरुआत होती है। इनमें शामिल की गई रचनाओं को छोटा और संदर्भित (Adaptation) करने के चक्कर में पाठ्यपुस्तक निर्माताओं ने बच्चों से जुड़ाव बनाने की ताकत को ही खो दिया है। उदाहरण के लिए, 'द माईटी कैटरपिलर' (सनबीम, कक्षा 1, पृ. 82) इलेन लिंडे की मजेदार कहानी है; परन्तु रूपान्तरण के दौरान उसकी जिज्ञासा, उत्सुकता, कल्पनाशीलता और सौंदर्यबोध लगभग खत्म हो गए हैं।

Adapted text:

'Chinnu came after some time. He asked, what is going on here? Someone is in my cave. Who is there inside? There came the reply, It is I! I am the biggest and strongest one of them all.'

Original Text:

'When the hare returned home, he noticed new marks on the ground going into the cave. He called, Who's in my house? The caterpillar boomed out in a loud voice, It is I! Yes, I who crushes rhinos to the earth and tramples elephants into dust!'

मूल रचना की पंक्तियों में वह ताकत है जो बच्चे को कई तरह से सोचने को प्रेरित करती है। जैसे खरगोश को अपनी गुफा के रास्ते में पैरों के निशान दिखे और वह चिन्तित हुआ। उसके दिमाग में द्वंद्व चलता है, तरह-तरह के ख्याल आते हैं और वह इस नतीजे पर पहुंचता है कि कुछ गड़बड़ है। वह गुफा के बाहर से ही आवाज लगाता है। किसी परिस्थिति में फंसने पर जो अहसास इन पंक्तियों से होता है वह बच्चे को मानसिक स्तर पर कहानी से जोड़ता है जो कि रूपान्तरित रचना से गायब हो गया है। लगता है खरगोश को बस इल्हाम हो गया है कि गुफा में कोई है और वह आवाज लगाता है। ऐसी महत्त्वपूर्ण चीजें (शब्द चयन, क्रमबद्धता, संगतता और सामान्यीकरण) दोनों रचनाओं में जमीन-आसमान का फर्क पैदा कर देती हैं। बात के कहने के अंदाज में रूपक महत्त्वपूर्ण होता है। जैसे, यदि किसी के मोटापे की तरफ इशारा करना है तो उसे 'हाथी जैसा मोटा' कहें तो यह अभिव्यंजना का एक स्तर है जिसे ऊपर की मूल पंक्तियों से गायब कर दिया गया है। पाठ्यपुस्तकों की अधिकांश रचनाओं के साथ ऐसा ही हुआ है। एक

अन्य उदाहरण 'अ डेज वेट' (सनबीम, कक्षा 8, पृ. 65) कहानी में भी देखा जा सकता है। यह अर्नस्ट हैमिंग्वे की खूबसूरत रचना है परन्तु इसमें से जीवन का संचार करने वाली चीजें हटा दी गई हैं और केवल वही चीजें रखी गई हैं जिससे कहानी की घटना समझ में आ जाए। इसमें ऐसी अनेक पंक्तियों को हटा दिया गया है जो मनोभावों को छूती हैं यानी उसके मूलभाव को ही निकाल दिया गया है। सरलीकरण या संदर्भीकरण के चक्कर में साहित्यिक आस्वाद में ये रचनाएं बेजान हो गई हैं।

पाठ्यपुस्तकों के अंत में कुछ ऐसे पृष्ठ हैं जिसमें अच्छी रचनाएं चुनकर छापी जा सकती थीं परन्तु वहां भी या तो नीरस रचनाएं या फिर 'प्यासा कौआ' अथवा 'खरगोश और कछुआ' जैसी सदियों से प्रचलित कहानियां हैं। यदि इन्हीं को लेना था तो इब्ने इंशा की लिखित कहानी को ले सकते थे जो कल्पना के एक नए पुट के साथ आती हैं।

हम कितना आगे बढ़े?

इन पाठ्यपुस्तकों को ऊपरी तौर पर देखने पर लगता है कि पहले की अपेक्षा यह भाषा शिक्षण के तरीकों में आगे बढ़ी हैं परन्तु अभ्यासों को देखने से निराशा होती है। लगता है कि बहुत जल्द ही पुस्तकों की सीमाएं दिखने लगी हैं। पाठ्यपुस्तकों में शामिल रंगीन चित्रों और इबारत के अच्छे आकार में 'परंपरागत अभ्यास' अपनी जगह बनाए हुए हैं। कक्षा 6 में कुल 128 सवाल दिए गए हैं जिसमें से केवल 48 सवाल ऐसे हैं जो बच्चे द्वारा अर्थ निर्मित कर पाने की तरफ बढ़ते हैं। इसी तरह से कक्षा 7 में 131 में से 47 सवाल और कक्षा 8 में 146 में से 56 सवाल अर्थ निर्मित कर पाने का सामर्थ्य रखते हैं। कक्षा एक को छोड़कर प्रत्येक पाठ के अभ्यास की शुरुआत 'लैट्स अंडरस्टैंड' से होती है और यह मुद्दा गौण रहता है कि क्या बच्चे ने उस पाठ का अर्थ निर्मित (meaning making) किया है। पाठ्यपुस्तकों में ऐसे प्रश्न हैं, 'What are minerals? What is zinc smelting?' (कक्षा 5, पृ. 31) अथवा 'Why was Gannu sad when Beni Ram first saw her?, Why did Kinnu scream suddenly?' (कक्षा 7, पृ. 57) कहने का आशय यह नहीं है कि इस तरह के सवाल पुस्तक में होने ही नहीं चाहिएं। सवाल यह है कि हम इनको इतनी प्राथमिकता क्यों देते हैं? क्यों न हम किसी ऐसी गतिविधि या अभ्यास से शुरुआत करें, जिसका शीर्षक हो 'आओ कल्पना करें या 'ऐसा होता तो क्या होता' आदि।

पाठ्यपुस्तक में व्याकरण पर भी काफी जोर है। 'लैट्स लिसन एंड टॉक' भाग में लिखा है, Work in pairs and write the plurals of the words given below : 1. Metal, 2. Ball, 3. Coin… (कक्षा 5, पृ. 65) अथवा, 'Let's play the game Acting Opposites in pairs. You need to do the action opposite to what your friend does' (कक्षा 3, पृ. 80)। ऐसा नहीं है कि स्कूली शिक्षा में व्याकरण नहीं सिखाना चाहिए बल्कि व्याकरण अभ्यास में ऐसे गुंथा हुआ होना चाहिए जिससे बच्ची स्वयं पैटर्न ढूंढ़ते हुए भाषा का विश्लेषण करना सीख सके, जैसा दूसरे उदाहरण में दिखाई देता है। ये पाठ्यपुस्तकें ऐसा दावा तो करती हैं परन्तु हर पाठ के अभ्यास में यह दिखता है कि या तो व्याकरण सिखा रहे हैं या फिर सूचनात्मक सवालों पर काम करने का अवसर दे रहे हैं।

ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं जहां चुने हुए शब्दों को अगर ध्यान से पढ़ें तो पता चलता है कि उसमें ढेर सारी ध्वनिशास्त्र (Phonics) की समस्याएं हैं। कक्षा तीन में 'सीजन' नामक खंड़ में 'लैट्स मेक वर्ड्स' में दी गई गतिविधि के शब्द देखिए: sun/son, cloud/crowd, rain/cane, scream/stream and coat/cot; इन शब्दों में पहला जोड़ा समध्वनिक शब्द (homophones) का उदाहरण है। समध्वनिक शब्द वे होते हैं जहां दो शब्दों की ध्वनियां एक जैसी होती हैं लेकिन उन दोनों शब्दों का अर्थ अलग हो सकता है या उन दो शब्दों की वर्तनी अलग हो सकती है या दोनों यानी अर्थ और वर्तनी दोनों ही अलग हो सकती हैं। दूसरे, तीसरे, चौथे जोड़े में एक जैसी संयुक्त ध्वनियां (dipthongs) हैं। संयुक्त ध्वनि वह होती है जहां एक शब्द में एक से अधिक वर्णों की ध्वनि मिलाकर एक ध्वनि की तरह से सुनाई दे। पांचवें में शब्द की पहली और अंतिम ध्वनि एक हैं लेकिन dipthongs अलग हैं। अब सवाल यह है कि क्या इस स्तर की फॉनिक्स कक्षा तीन के लिए उचित है, जरूरी है या फिर यहां भाषायी शिक्षणशास्त्र की दृष्टि से शब्दों के चयन पर ध्यान नहीं दिया गया है।

कक्षा एक की पाठ्यपुस्तक में ट्रेसिंग पैटर्न का इस्तेमाल हुआ है, जिसमें चुने गए पैटर्न आधे खाए वर्ण जैसे लगते हैं। इनको देखने से लगता है कि यहां 'लिखने की तैयारी' करवाई जा रही है परन्तु ध्यान से देखने पर पता चलता है कि ये 'वर्ण लिखना सिखाने' के लिए हैं। यदि वर्ण ही सिखाने थे तो क्या कोई रचनात्मक तरीके इस्तेमाल नहीं हो सकते थे? यदि लिखने की तैयारी कर रहे थे तो क्या हम सीधी या टेढ़ी लाइनों के लिए राजस्थानी कला जैसे मांडने का इस्तेमाल नहीं कर सकते थे और वक्र लाइनों के लिए कोई दूसरी कला?

आगे इसी पाठ्यपुस्तक में 'एनीमल्स एंड बर्डस' थीम में से दो पन्ने दिए गए हैं। इन पन्नों में प्रत्येक पक्षी के चित्र में एक वर्ण को छापा गया है और निर्देश है छुपे हुए वर्ण ढूंढ़ना। परन्तु इसमें न तो कुछ छुपा हुआ है और न ही सुन्दर तरीके से डिजाइन किया गया है। पक्षियों के शरीर पर जहां जगह मिली वहां वर्ण छाप दिया गया है। प्रश्न यह है कि क्या हम अपने पढ़ाने के तरीकों में कुछ आगे बढ़ पाएं हैं?

शिक्षक पृष्ठ में यह बात बार-बार उठकर आती है कि बच्चों को शुद्ध उच्चारण सिखाएं परन्तु कहीं यह नहीं समझाया गया है कि 'शुद्ध उच्चारण' होता क्या है? हम जानते हैं कि भाषा में शुद्ध उच्चारण का पुराना झगड़ा है और हमें यह भी मालूम है कि द्वितीय भाषा के शिक्षण में 'स्टैंडर्ड इंग्लिश' पर जो जोर दिया जाता है उसकी वजह से ही यह शुद्ध उच्चारण जैसे शिक्षणशास्त्रीय पहलू पाठ्यपुस्तकों में अपना प्रभाव जमाते हैं। यहां भी जिस तरह से शुद्धता का आग्रह है उसमें इस बात के बहुत खतरे हैं कि यह बच्चों को रटने की तरफ ले जाएगा।

शब्दार्थ का चक्कर

इन पाठ्यपुस्तकों में शब्दार्थ की समस्याएं भी झांकती दिखाई देती है। पुस्तकों में प्रत्येक पाठ में मुश्किल शब्दों के अर्थ डिब्बों में दिए गए हैं जिसमें तीन तरह की समस्या हैं: (1) शब्दार्थ में अवधारणात्मक गड्डमड्ड है जैसे कि seasons का अर्थ 'मौसम' दिया गया है (कक्षा 3, पृ. 61) जो कि 'ऋतु' होता है या unfurl का अर्थ open दिया है जो कि unroll/unfold ज्यादा उपयुक्त हो सकता था या prohibit का अर्थ दिया है stop doing something by law जबकि इस शब्द को काम में लेते समय कानूनी प्रावधान होना जरूरी नहीं होता, (2) प्राथमिक स्तर की पुस्तकों में काफी शब्दों के अर्थ हिन्दी में दिए गए हैं जो कि अच्छा है परन्तु जहां ये दिए जाने चाहिए थे वहां नहीं दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, over the moon मुहावरे का शाब्दिक अर्थ दिया है very happy यहां बेहतर होता अगर एक हिन्दी मुहावरा दे दिया जाता जिससे बच्चा न केवल अर्थ समझ पाता अपितु यह भी समझता कि over the moon एक मुहावरा है (कक्षा 5, पृ. 53), (3) मुश्किल शब्दों के अर्थ को समझाने के लिए चुने गए हिन्दी के शब्द भी बच्चे के लिए उतने ही मुश्किल हैं जितने अंग्रेजी में थे। क्या कक्षा पांच की बच्चे 'device' का अर्थ 'उपकरण' या फिर density/memorial/pasture का अर्थ घनत्व/स्मारक/चरागाह समझ पाएंगे?

यह भी नहीं पता चलता कि शब्दों के अर्थ समझाते समय क्या हम विवरण देकर/पर्यायवाची देकर/अनुवाद करके इसे समझाना चाहते हैं। शब्दार्थ के संदर्भ में पाठ्यपुस्तक का पक्ष समझ में नहीं आता। शायद यही कारण है कि कभी-कभार 'संज्ञा' शब्द का अर्थ 'क्रिया शब्द' में बदल जाता है जैसे, 'sweat' (noun) का अर्थ दिया है 'पसीना आना' जबकि 'पसीना आना' का अर्थ होता है sweating/to sweat. या फिर 'dig' (noun) का अर्थ दिया है खुदाई करना हालांकि 'खुदाई करना' का अर्थ होता है digging/to dig. आपको सारी पाठ्यपुस्तकों में ऐसे काफी उदाहरण मिल जाएंगे। सवाल यह भी उठता है कि आखिर शब्दार्थ के लिए शब्दों को किस कसौटी पर चुना गया है?

बच्चे की समझ

भाषा सीखने में बातचीत, संबंधों को देख पाना, जांच-पड़ताल के लिए जगह और तर्कशीलता होनी चाहिए, जैसा एनसीएफ 2005 भी कहता है। पाठ्यपुस्तकों में बातचीत, पढ़ाई और लिखाई दिखती जरूर है परन्तु वह बहुत सारी बाधाओं में बंधी हुई है। यह एक दूसरी समस्या की ओर भी संकेत करता है कि अगर लिखना और बोलना हर वक्त

निर्देशों के दायरे में है तो असल में शिक्षक और पाठ्यपुस्तक ही महत्त्वपूर्ण बात कर रहे हैं। इससे बच्चे के दिमाग में यह सोच बनने लगती है कि उनकी भूमिका इस प्रक्रिया में सिर्फ सुनने की है, और जो बोला गया है वह उसे करना है। यह परिस्थिति बच्चे को एक निष्क्रिय सीखने वाले की तरफ धकेलती है। 'listen carefully' अथवा 'your teacher will read out a poem for you.' जैसे निर्देशों की भाषा बताती है कि बच्चे के लिए सुनना कितना महत्त्वपूर्ण है। इसके विपरीत अधिकतर गतिविधियों में जहां बच्चे अपने सहयोगियों के साथ बातचीत करते हैं उसमें यह नजर नहीं आता कि शिक्षक की उसमें क्या भूमिका है? जैसे 'Work in pairs, and discuss what you like about the rainy season and what you don't like.' (कक्षा 3, पृ. 73) इसके बाद क्या होगा ये स्पष्ट नहीं है।

शब्दों के साथ खेलना (word play) भाषा के सीखने में बच्चे के लिए एक महत्त्वपूर्ण तरीका है। उनको इन शब्दों के साथ खेलने में मजा आता है। उदाहरण के लिए, अगर एक बच्चा बूम (BOOM) शब्द पर जोर देना चाहता है तो वह उसको बड़ा लिख सकता है, उसको जोर से चिल्ला भी सकता है या उसमें ढेर सारे ओ वर्ण (BOOOOM) भी जोड़ सकता है। आजकल कहानियों की पुस्तकों में ये शैलियां अपनाई जाने लगी हैं जो सुनने या पढ़ने वाले की भाषा में रुचि बनाए रखती हैं। इसी तरह से अभिनय भी भाषा शिक्षण की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है जिसके कभी-कभार ही दर्शन होते हैं और जहां होते हैं वहां पर चीजों को केवल दोहराने की अपेक्षा की गई है जिसमें कल्पना या रचनात्मक भागीदारी का पुट गायब है।

प्राथमिक स्तर पर काफी गतिविधियां और खेल दिए गए हैं जो कुछ हद तक उच्च प्राथमिक स्तर पर भी हैं। परन्तु चुने गए खेलों का भाषा सीखने से कोई सीधा संबंध दिखाई नहीं देता। हां, यह खेल कुछ हद तक बातचीत करने का मौका जरूर देते हैं, लेकिन फिर भी इन खेलों के चुनाव में थोड़ी और मेहनत होनी चाहिए थी। ऐसा लगता है कि संदर्भीकरण के चक्कर में सितोलिया, खो-खो मात्र खेल ही रह गए हैं। अगर इन खेलों को ही चुनना था तो फिर इन्हीं खेलों में कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे बच्चे को अंग्रेजी भाषा सीखने में मदद मिलती। उदाहरण के लिए, अगर हम एक ऐसा खेल चुनते हैं जिसे बच्चे पहले से जानते हों और फिर उस खेल के नियम अगर अंग्रेजी में भी बोले जाएं तो बच्चे को खेल समझ आने के साथ-साथ नई भाषा सीखने में भी मदद मिलेगी। इस प्रक्रिया के दूसरे चरण में अगर हम उसी खेल में एक नया मोड़ या परिवर्तन ले आएं तो वह अंग्रेजी समझने के साथ एक बच्चों को तरीके की संज्ञानात्मक चुनौती भी देगा जो इस नई भाषा को सीखने में और भी रुचि बढ़ाते हुए मददगार होगा और साथ ही साथ बच्चे में अनुमान, निर्णय, तर्कशीलता, संप्रेषण आदि कौशलों का विकास भी होगा। या फिर यह भी हो सकता था कि शिक्षक पृष्ठ में इस बात की चर्चा होती कि कैसे इन खेलों को अंग्रेजी भाषा सीखने के तौर पर काम में लिया जा रहा है। काश! पाठ्यपुस्तक निर्माता बच्चों की सामर्थ्य का अंदाज लगा पाते तो ये चीजें और सुन्दर एवं पठनीय हो सकती थीं।

बच्चे के बारे में संज्ञानात्मक समझ का अभाव विषयवस्तुओं के चयन में भी दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, त्यौहार बच्चे के परिवेश के बहुत आस-पास की चीज हैं परन्तु इसे कक्षा पांच में शामिल किया गया है जबकि वैज्ञानिक मिजाज या संबंध अधिक अमूर्त चीज हैं जिसे कक्षा तीन में ही स्थान दे दिया गया है। यह भाषा के शिक्षणशास्त्र को नजरअंदाज तो करता ही है, साथ ही बच्चे के सीखने की समझ की ओर भी इशारा करता है।

लेखन में असावधानी

पाठ्यपुस्तकों के कुछ पाठों में (जैसे कक्षा तीन में सीजनस्, फायरफलाइज) वैज्ञानिक भ्रांतियां दिखती हैं पर साहित्य होने के कारण इनको अनदेखा कर दिया गया है। लेकिन इन पर कक्षा में चर्चा होनी चाहिए, जो अभ्यास में दिखाई नहीं देती। शिक्षक पृष्ठ में 'सीजनस्' के बारे में लिखा गया है- 'Also explain the scientific reason for seasons (the axis of the Earth is tilted 23.5 degrees, therefore, different parts of the earth get rays of the sun at different times of the year. The areas which get direct rays of the sun have summer and those which

get slanted rays have winter). Use a globe and a torch to show this.' (कक्षा 3, पृ. 84) शिक्षक के लिए दिया गया यह विवरण स्वयं में भ्रामक है और यदि इसे थोड़ी देर के लिए सही मान भी लें तो क्या कक्षा तीन के बच्चे काल्पनिक रेखाएं, अक्ष या किरणों के टेढ़ा होने पर ऋतुओं के बदल जाने जैसे सवालों पर सोचने के लिए तैयार हैं? क्या यह इस उम्र में जरूरी भी है? क्या कक्षा तीन के अंग्रेजी शिक्षक के पास पर्याप्त ज्ञान है जो इन अवधारणाओं को समझाने के लिए चाहिए?

पाठ्यपुस्तक को बनाने में हुई असावधानी के कुछ उदाहरण देखिए। शरीर के अंगों को समझाने के लिए प्रयुक्त तीर का सिरा छाती (chest) पर है और वहां शब्द दिया है गला (neck) या फिर तीर का सिरा कलाई (wrist) और बाजू (arm) पर है लेकिन शब्द दिया है हाथ (hand) (कक्षा 1, पृ. 9)। इसी पुस्तक में एक जगह लिखा है, 'Her mother is carrying vegetable' (कक्षा 1, पृ. 57) यहां वैजीटेबल बहुवचन होना चाहिए था क्योंकि चित्र में एक से अधिक सब्जियां हैं। एक और उदाहरण, "Said, Hello! To the cloud as they passed by" (कक्षा 1, पृ. 61) जब हम they शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं तो cloud बहुवचन होगा। ऐसी गलतियां अन्य पाठ्यपुस्तकों में भी हैं जैसे कि कक्षा 6 के अभ्यास में होमाफोन्स (homophones) के जोड़े में 'for-four' (कक्षा 6, पृ. 53) दिया है जिसे fore-four होना चाहिए था। अब ये मालूम नहीं चलता कि इन पर ध्यान क्यों नहीं दिया गया?

शिक्षक होने का अर्थ

पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'शिक्षक' पृष्ठ को अगर ध्यान से देखें तो भी यह छवि नहीं बन पाती कि यह शिक्षक कौन है? इन शिक्षकों के पास किस तरह की सामर्थ्य है? या चाहिए जैसे, कक्षा एक में दोनों भाषाओं (हिन्दी-अंग्रेजी) में शिक्षक पृष्ठ में दिए गए हैं, जो अच्छी बात है। इसमें यह स्वीकारोक्ति दिखाई देती है कि शिक्षक अंग्रेजी में बहुत निपुण नहीं है। अचानक से कक्षा तीन में 'शिक्षक पेज' अंग्रेजी में दिए गए हैं और कक्षा पांच में ये अवधारणात्मक जटिलता एवं भाषायी क्लिष्टता का शिकार हो गए हैं। क्या इसका आशय है कि जिस तरह से बच्चे अंग्रेजी सीख रहे हैं वैसे ही शिक्षक भी सीख रहे हैं? यदि हां, तो क्या दोनों का सीखना एक ही तरह से और एक ही सामग्री के साथ हो रहा है? यदि ऐसा है तो फिर यह अनुवाद सारी पाठ्यपुस्तकों में क्यों नहीं जारी रखा गया? एक तरफ पाठ्यपुस्तक की शुरुआत में कहा गया है कि शिक्षक के लिए अनुवाद व सरल भाषा काम में ली गई है तो दूसरी तरफ क्लिष्ट अंग्रेजी में उसके लिए निर्देश लिखे गए हैं।

दूसरी समस्या यह है कि गतिविधि करने के तरीके को तो समझाने की कोशिश हुई है परन्तु ये गतिविधियां द्वितीय भाषा सीखने के उद्देश्यों को कैसे पूरा कर रही हैं, यह छोड़ दिया गया है। पाठ्यपुस्तक के अभ्यास में एक शब्द दिया गया है और बच्चे को उससे संबंधित शब्द लिखने हैं, जैसे 'फैमिली' या 'लाइट' और बच्चे लिख सकते हैं mother, sister, brother या candle, diya इत्यादि। यह गतिविधि अभ्यास में शब्दों को बदलकर बार-बार इस्तेमाल की गई है, परन्तु शिक्षक पृष्ठ में कोई ऐसी जगह नहीं है जहां इस गतिविधि का भाषा सीखने के संदर्भ में उद्देश्य बताया गया हो। क्या प्राथमिक स्तर पर इस गतिविधि से शब्दावली बढ़ाने या संज्ञानात्मक चुनौती देने की कोशिश की जा रही है और उच्च प्राथमिक स्तर पर इस गतिवधि का मकसद लिखने की क्षमताओं को बढ़ाना है? एक और उदाहरण है जिसमें jumbled words को आगे-पीछे कर सार्थक वाक्य बनाने हैं। इस गतिविधि के बाद बच्चे से पूछा गया है कि क्या आपको कोई कॉमन पैटर्न दिखाई दे रहा है। शायद यहां पर कर्ता, क्रिया, कर्म के पहलुओं को सिखाने की कोशिश की जा रही है परन्तु समस्या यह है कि इसको भी शिक्षक पृष्ठ में नहीं समझाया गया। मान लें, अगर बच्चे को वह कॉमन पैटर्न समझ नहीं आया तो क्या होगा? और अगर वह शिक्षक को भी समझ में नहीं आया तो उस स्थिति में क्या होगा? प्रश्न यह भी उठता है कि आखिर शिक्षक से हमें किस स्तर की अपेक्षा है? पांचवीं कक्षा के शिक्षक पृष्ठ चार में एक वर्ण को दो टेढ़ी लाइनों /s/ के बीच लिखा गया है। क्या यह मान सकते हैं कि शिक्षक यह जानता है कि यहां वर्ण की बात नहीं की जा रही है अपितु उसकी ध्वनि की बात की गई है? कक्षा सातवीं में एक

गतिविधि को समझाते समय 'diphthong' शब्द काम में लिया गया है परन्तु इसे समझाया नहीं गया है। इसी तरह से शिक्षक को सलाह दी गई है कि वह 'cloze activities' का इस्तेमाल करे। क्या शिक्षक को मालूम है कि यह प्रक्रिया क्या है?

पाठ्यपुस्तक निर्माताओं के पास पाठ्यसामग्री का भी अभाव दिखता है। शिक्षक पृष्ठ में वे उन्हीं उदाहरणों को काम में लेते हैं जो बच्चों के अभ्यास में दिए गए हैं। यदि शिक्षक पेज में उदाहरण बदल दिए जाते तो शिक्षक के पास बच्चों से बातचीत या गतिविधि के लिए और अधिक संसाधन हो सकते थे। इसका एक निहितार्थ यह है कि पाठ्यपुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षकों को न केवल पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए अपितु उन्हें ध्यान से सुना जाना चाहिए।

संदर्भीकरण और सांस्कृतिक पुनरुत्पादन के बीच में

इन पाठ्यपुस्तकों में जेंडर के पूर्वाग्रह काफी स्पष्टता से दिखते हैं। अधिकतर माएं बच्चों को स्कूल ले जाती हैं या परंपरागत कामों में संलग्न हैं और पिता या तो महत्त्वपूर्ण माने जाने वाले काम करते दिखाई पड़ते हैं या चित्रों में हैं ही नहीं। क्या हम इस संस्कृति को पुनरुत्पादित करने की कोशिश कर रहे हैं या इसमें कोई बदलाव लाने की कोशिश कर रहे हैं? इससे अगला प्रश्न यह उठता है कि किस हद तक यह बदलाव होना चाहिए? इस मुद्दे को निरन्तर अपने दिमाग में रखना चाहिए कि संदर्भीकरण और संस्कृति के पुनरुत्पादन में एक बहुत बारीक रेखा है। शैक्षिक उद्देश्य सिर्फ किसी एक पक्षधरता का मामला नहीं है। शैक्षिक उद्देश्य का आशय विभिन्न तरह के दृष्टिकोणों का विकास करना, विचारों पर संवाद के लिए स्थान बनाना और अंतिम निर्णय सीखने वाले पर छोड़ना होना चाहिए, दूसरी तरह कहें तो सकारात्मक भ्रम (A state of 'positive' confusion) जो स्वतंत्र एवं समालोचनात्मक चिंतक होने के लिए अनिवार्य है। मूल्यबोधक कथनों की स्थापना के तौर पर संस्कृति के पुनरुत्पादन के और भी उदाहरण हैं जैसे कि 'TV is bad! या school is great! इन कथनों के लिए पुस्तक में यह सोचने की कोई जगह नहीं है कि क्यों और कैसे स्कूल अच्छा है या टीवी देखना क्यों खराब है?

बच्चों के लिए एक प्रोजेक्ट है जिसमें समुदाय में जाकर काम-धंधे के बारे में पूछना है कि वे इस व्यवसाय के द्वारा कैसे अन्य व्यक्तियों की मदद करते हैं और दूसरे व्यक्ति उनके साथ कैसे व्यवहार करते हैं। इसके दो प्रश्न काफी वजनदार हैं पर इनको बहुत ही हल्के से लिया गया है। इसे देखने में यह मान्यता निहित है कि सभी काम या सेवाएं किसी न किसी तरह से व्यक्तियों की मदद करते हैं जैसे टेलीफोन, इंटरनेट सर्विस, डॉक्टर या फायरफाइटर। लेकिन समुदाय में ऐसे भी काम हैं जिन्हें वर्जित माना जाता है। जैसे, शराब या नशीले पदार्थ बेचना, मिलावटी सामान बेचना। सवाल यह भी है कि क्या ऐसे व्यक्ति दूसरों की मदद कर रहे हैं? ये पेचीदा सवाल हैं जिन पर पाठ्यपुस्तक में न तो किसी तरह की चर्चा है, न कोई शिक्षक के लिए हिदायत।

'फंड्स ऑफ नॉलेज' मॉल द्वारा प्रयुक्त एक प्रसिद्ध टर्म है। हमें मालूम है कि जब बच्चा स्कूल में पहली बार आता है तो वह अपने अनुभवों, ख्यालों, विश्वासों और सबसे महत्त्वपूर्ण एक मौखिक-श्रृवणिक क्षमता के साथ आता है। यही वह 'फंड्स ऑफ नॉलेज' है जिनका इस्तेमाल होना चाहिए लेकिन पाठ्यपुस्तकों में संदर्भीकरण के दौरान इसका फायदा नहीं उठाया गया है। इसी तरह से सामाजिक-सांस्कृतिक निधि जिसे बोर्द्यू 'सांस्कृतिक पूंजी' कहते हैं, पर भी ध्यान नहीं दिया गया है। उदाहरण के लिए, खो-खो, सितोलिया जैसे खेल या फिर रणथम्भौर, राजस्थान में बालिका शिक्षा की समस्याएं जैसी स्थानीय विषयवस्तु पाठ्यपुस्तक में ली तो गई है लेकिन पुस्तकों में इन उदाहरणों से आगे नहीं बढ़ा गया अर्थात् जितनी सूचना बच्चे के पास है उसी के आस-पास पाठ्यपुस्तक निर्माता घूमते रहे हैं। संदर्भीकरण करने के दो उद्देश्य होते हैं। एक, बच्चे अपने को जोड़कर देख सकें और दूसरा, ज्ञात से अज्ञात की तरफ जा पाएं अर्थात् जहां वह अपने ज्ञान का सामान्यीकरण कर पाएं। परन्तु सामान्यीकरण का मुद्दा इन किताबों में गायब है।

लोकप्रिय नारे

पाठ्यपुस्तक में समावेशी शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता जैसे मुद्दों पर बच्चे के दृष्टिकोण के विकास की बात की गई है। परन्तु यह दृष्टिकोण पुस्तकों में समग्रता में दिखाई देने की बजाय टुकड़ों में नजर आते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा तीन में 'साइंटिफिक टैम्पर' एक पूरा थीम है जिसमें सिर्फ विज्ञान को लेकर बात की गई है जबकि 2011 के पालमपुर घोषणा में इसे संशोधित करते हुए कहा गया है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण सिर्फ विज्ञान तक सीमित नहीं है अपितु उससे आगे जाता है। परन्तु इन पाठ्यपुस्तकों में यह केवल विषयवस्तु के तौर पर सिमट गया है और इसमें केवल विज्ञान की ही बात हुई है। क्या सिर्फ तीन पाठों के आधार पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को हासिल किया जा सकता है?

समावेशी शिक्षा को भी सीमित अर्थों में काम में लिया गया है। कक्षा पांच में एक पाठ विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों पर केन्द्रित है जिसमें एक पर्वतारोही की टांगें टूट जाने के बावजूद वह आज भी पहाड़ चढ़ता है और कहानी में उसे नायक की तरह प्रस्तुत किया गया है। सवाल यह है कि ऐसी कहानियों से हम विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति बच्चे में किस तरह की समझ विकसित करना चाहते हैं? आगे सूक्ति की तरह कहा गया है, 'तुम्हें इन लोगों को चिढ़ाना नहीं चाहिए बल्कि तुम्हें इन लोगों की मदद करनी चाहिए।' सभी पाठ्यपुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर एक जैसे चित्र दिए हैं जो यह समझाते हैं कि 'विकलांग साथियों' के साथ हमें किस तरह का बर्ताव करना चाहिए। मुद्दा यह है कि क्या समावेशी शिक्षा 'शारीरिक विकलांगता' तक ही सीमित है? सवाल यह है कि इस शब्दावली के प्रति पाठ्यपुस्तक निर्माताओं का क्या नजरिया है? ऐसी प्रतिबद्धता इन पाठ्यपुस्तकों में कमजोर वर्ग, वंचित वर्ग या महिलाओं के लिए क्यों नहीं दिखाई देती? एनसीएफ 2005 में समावेशी शिक्षा का जो अर्थ लिया गया है वह समग्रता दर्शाता है लेकिन यहां उसका केवल एक टुकड़ा ही काम में लिया गया है।

पाठ्यपुस्तकों में भारी-भरकम विषय डाल दिए हैं जैसे बाल अधिकार, वातावरण के प्रति संवेदनशीलता, मेरा राज्य आदि। यह सारे मुद्दे चर्चा का विषय बनने की बजाय सतही तौर पर बनावटी कहानी और अभ्यास में खत्म हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, एक चित्र दिया गया है और उसके साथ लिखा गया है कि 'कुछ बच्चों को शिक्षा नहीं मिलती क्योंकि वे काम करते हैं।' क्या बच्चों के स्कूल न आने का सिर्फ यही कारण है? क्या इसे वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में समझने के अवसर सृजित नहीं करने चाहिएं? यह समस्या को बहुत ही साधारण और बनावटी तरीके से देखना है। इसी पाठ में आगे कहा गया है कि अगर 6 से 14 साल के बच्चे कहीं काम करते हुए दिखें तो लोग सरकार को इसकी सूचना दे सकते हैं और वह मुद्दा हल हो जाएगा। ऐसा लगता है कि घरेलू एवं पैसे कमाने वाले कामों को एक ही श्रेणी में डाल दिया गया है। क्या बाल श्रमिक मुक्त समाज बनाना इतना आसान है?

एक कॉमिक स्ट्रिप में दिखाया गया है कि विभिन्न अश्लील हरकतों के समय बच्चे कैसे अपने-आपको सुरक्षित रखें। इसमें परिवार का चित्र दिया गया है जिसमें लिखा है कि यदि कोई आपको चिढ़ाए, बात छुपाने के लिए बोले तो किसी वयस्क सदस्य को बताइए। यह सच है कि चाइल्ड एब्यूज भारत में गंभीर विषय है और यह अधिकतर नजदीकी लोगों द्वारा ही किया जाता है। बच्चों को इन मुद्दों को समझने का अवसर मिलना चाहिए। क्या इस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए कि वह वयस्क कौन होगा? यदि यह अवसर पुस्तकों में होता तो बच्चों को समझने का अवसर मिलता।

पुस्तक में 'A cycle's wish' नाम से एक अनुदित कहानी है जिसमें एक बच्चे की दादा बनने की ख्वाहिश है। जब दादा इसका कारण पूछता है तो बच्चा बताता है कि क्योंकि सब दादा को सुनते हैं और उनकी इज्जत करते हैं, इसलिए वह दादा बनना चाहता है। अब कहानी में एक लाइन में उपदेश दिया गया है कि तुम जो इच्छा पालते हो उसके बारे में सावधान रहो और बच्चे की अंदरूनी भावनाओं को पूरी तरह से नकार दिया गया है। इसके बाद साइकिल की कहानी शुरू होती है। इस कहानी में इस छह पंक्तियों के दादा-पोते के संदर्भ की आवश्यकता ही नहीं थी। क्या अभ्यास में यह अवसर नहीं होना चाहिए था जो यह समझा पाए कि इज्जत करने के क्या आधार हो सकते

हैं और बच्चे भी इज्जत के उतने ही हकदार हैं, जितने की बड़े। यह इसलिए भी जरूरी है कि बड़ों के लिए जो बहुत छोटी बात हो सकती है वही बात बच्चों के लिए कई बार बहुत जरूरी विश्वास बन जाती है और बाद में यही उनकी दुनिया बन जाती है। पाउलो फ्रेरे का यह कथन महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि:

''शब्दों को पढ़ना और दुनिया को पढ़ना एक गहरे स्तर पर अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं- सच तो ये है कि एक गहरे स्तर पर ये दोनों प्रक्रियाएं एक ही हैं।'' (पाउलो फ्रेरे, 1955)

पाठ्यपुस्तक के अंतिम पृष्ठों पर कई चित्र मुश्किल अवधारणाओं के साथ दिए गए हैं जिनकी प्रासंगिकता समझ में नहीं आती। जैसे कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर यातायात संकेत हैं और उसके साथ पाठ भी दिया गया है जो मुश्किल हिन्दी में है। ऐसा लगता है किसी सरकारी यातायात निर्देशिका से उतारकर इसे यहां रख दिया गया है। अगर इसे देना मजबूरी थी तो फिर इसकी भाषा को बच्चों की समझ के मुताबिक संवारना चाहिए था।

एनसीएफ 2005 शिक्षा के बारे में एक नजरिया बनाने में मदद करता है जिसमें शिक्षा के बारे में विचार, मूल्य, ज्ञान, सीखने के बारे में मान्यताएं आदि शामिल हैं। परन्तु इन पुस्तकों को पढ़ने पर लगता है कि यह पुस्तक निर्माण की प्रक्रिया की अंदरूनी बाध्यताओं का परिणाम है जिसकी वजह से यह टुकड़ों-टुकड़ों में प्रदर्शित हुआ है। इससे बच्चों की अंग्रेजी भाषा की क्षमताओं में कितना इजाफा होगा, यह सवालों के घेरे में है।

उम्मीद-नाउम्मीदी के दरम्यान

इन पाठ्यपुस्तकों में नीरस सामग्री का चयन, व्याकरण का बोझ, शिक्षक से असंगत एवं उच्च स्तर की अपेक्षाएं, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर की अपेक्षाओं में तालमेल का अभाव जैसी बातें दृष्टिकोण के विकास तथा गतिविधियों के निर्धारण में दिखाई देती हैं। इस बात की बहुत अधिक संभावना थी कि यदि रचनाओं का चयन या पुनर्सृजन या एडेप्टेशन या अनुवाद करने में अधिक मेहनत की गई होती तो उसकी मौलिकता भी बरकरार रहती और बच्चों के लिए अंग्रेजी के साथ जुड़ाव की अधिक सशक्त परिस्थितियां बन सकती थीं। साथ ही रचना के मूल लेखक के साथ भी न्याय होता।

भाषा सीखने की नजर से भी समझें तो यह जरूरी है कि हम चीजों को टुकडों-टुकडों में देखने की बजाय उसे समग्रता में देखें और भाषा को स्वयं की अभिव्यक्ति के तौर पर भी समझा जाना चाहिए। जितना हम पाठ की गुणवत्ता को विभिन्न कारकों की वजह से बदलते हैं उतना ही सौंदर्यबोध और भाषा सीखने से दूर होते जाते हैं। ऐसा लगता है कि बच्चे को एक प्रश्नोत्तरी करने वाले इंसान के तौर पर देखने की रवायत जारी है। एक बार बच्चे का तीसरी भाषा यानी अंग्रेजी पर कुछ अधिकार हो जाता तो भाषा का विश्लेषण यानी व्याकरण पर सहजता से काम की शुरुआत की जा सकती थी।

इन पाठ्यपुस्तकों को पहली बार देखते हैं तो उम्मीद जागती है कि पाठ्यपुस्तकों में बहुत कुछ नया किया गया है और 'ज्ञान' और 'बच्चे के सीखने' को नई रोशनी में परिभाषित करने की तरफ बढ़ा गया है परन्तु पाठ दर पाठ बारीक अध्ययन करने पर निराशा हाथ लगती है और यह समझ नहीं आता कि इस तरह की आधी-अधूरी कोशिशें स्कूल के स्तर पर किस तरह का बदलाव ला पाएंगी।

प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक निर्माताओं में तालमेल का अभाव नजर आता है। इसलिए लगता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अचानक से अपेक्षाओं का विस्फोट हो गया है। इन पाठ्यपुस्तकों को स्कूल में किस तरह से देखा गया है और इस पर काम करने में किस तरह की परेशानियां शिक्षक साथियों को महसूस हो रही हैं, यह तो कोई अध्ययन ही बता पाएगा परन्तु लगता है कि शायद तीसरी भाषा यानी अंग्रेजी भाषा में सहज होने के लिए बच्चों को अभी और इंतजार करना पड़ेगा। ◆